ओमशान्ति। बाप को अविनाशी सर्जन भी कहते हैं। तो जब सर्जन समझ बैठते हो तो समझते हैं यह सब रोगी बैठे हैं। देहली में एक अजमल खां बहुत नामी–ग्रामी था। जब जाओ पेशेन्ट का ढेर बैठा रहता था। अभी वह तो है विनाशी सर्जन। यह है अविनाशी सर्जन। बाप समझाते तो हैं... इन सहित सभी पेशेन्ट हैं। कितना बड़ा सर्जन है। वह सर्जन तो करके उस समय उस शरीर के ही बीमारी बतावेंगे। यह तो जानते हैं सभी जन्म–जन्मान्तर के रोगी हैं। यह रोग कब से शुरू हुई है वह भी बताते हैं। जब से रावण का राज्य शुरू हुआ वाममार्ग में गये हैं तब से सभी रोगी बन गये हैं। अभी इन सभी को निरोगी बनाना है। जो फिर 21 जन्म कब कोई बीमारी न हो। बाप को तरस पड़ता है ना। जैसे डाक्टर को तरस पड़ता है ना। पेशेन्ट की दवाई करते हैं। यह तो समझते हैं मैं अविनाशी सर्जन हूँ। सभी बिचारे जन्म–जन्मान्तर के बीमारी(र) है। जबसे रावण का राज्य शुरू हुआ है। काम कटारी चलाना शुरू की है। एक/दो को दुःख दिया है तभी से बीमार हुए हैं। तुम्हारे इस रोग की दवाई और कोई करने वाला नहीं हैं। बाप ऐसी दवाई करते हैं जो तुम कब बीमार ही न पड़ो। तुम एवर हेल्दी बनने लिए आये हो। एवर हेल्दी, एवर हैपी। यहां तो भल कोई हेल्दी हो; परन्तु फिर कोई न कोई दुःख होता ही है। एवर हैपी रह न सके। यह तो है अविनाशी सर्जन। तुम जानते हो बरोबर हमको एवर हेल्दी, एवर हैपी, एवर वेल्दी बनाते हैं। तुम जानते हो इनमें शिवबाबा आया हुआ है। जैसे क्रिश्चियन लोग का जो सेन्ट ज़ैवियर मरा था उनका गोया में अभी तक लाश पड़ा है। दवाइयों के आधार पर उनके पैर रखे हुए हैं। सभी वहां जाते हैं उनके पैरों को हाथ लगाते हैं। समझते हैं ऐसे टच करने से बीमारी हट जावेंगी। बहुत क्रिश्चियन लोग आते हैं। फिर बीमारों से सारा मैदान ही भर जाता है। फिर ऐसे2 सभी के माथे पर हाथ लगाते जाते हैं। भावना होती है ना। यह सब नाम कर देते हैं। कोई2 को फायदा होता होगा तो नाम कर देते हैं। यह भी ड्रामा में नूँध है नाम बाला करने की। वह भी एक जन्म के लिए होता है। उस समय ठीक हुआ फिर भी कोई न कोई बीमारी हो जावेंगे। यह अविनाशी सर्जन तो ऐसा है जो 21 जन्मों लिए कब बीमारी होगी ही नहीं। तुम अविनाशी सर्जन के सामने बैठे हो। वह तो एक जन्म के लिए फायदा होता है। सो भी अल्पकाल लिए सुख। तुम बच्चे 21 जन्म कब बीमार नहीं होंगे। कब गरीब न होंगे। सभी कामनाएं तुम्हारी पूरी हो जाती है। अभी ऐसे बाप के सामने तुम बैठे हो। कितनी खुशी, कितना रिगार्ड होना चाहिए। कितना बाप को याद करना चाहिए। बाप क्या दवाई देते हैं? कहते हैं मीठे2 बच्चे, अपने को आत्मा समझ मामेकम् याद करो। तमोप्रधान से सतोप्रधान बनो। बाप जानते हैं तुम जन्म–जन्मान्तर के पापात्मा हो। अभी तुम समझते हो हम जन्म–जन्मान्तर के लिए पुण्यात्मा बनते हैं। यहां हर बात बेहद की है। बाप भी बेहद का है। सभी को ले जाते हैं मुक्तिधाम। सतयुग में तो होते ही हैं थोड़े सिर्फ भारतवासी। छोटा झाड़ है। यह इतना बड़ा पुराना झाड़ खत्म हो जाता है। तो तुमको बहुत खुशी में रहना चाहिए। बाबा से हम एवर हेल्दी, एवर वेल्दी, एवर हैपी बनते हैं। यह भारतवासी भी जानते हैं भारत जब बहुत प्राचीन था तब आयु बहुत बड़ी थी। तुम योगी थे तो 150 वर्ष की आयु थी। अभी भोगी बने हो तो अचानक बैठे2 भी शरीर छोड़ देते हैं। वहां कुछ भी रोग आद नहीं। ऐसे पैराडाइज़ के तुम मालिक बनते हो। बाप कहते हैं मीठे2 बच्चों सिर्फ अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। तुम सतोप्रधान थे ना। स्मृति आती है ना। यह ल0ना0 जब थे तो दुनिया सतोप्रधान थी ना। अभी तमोप्रधान है। यह सब राज़ तुम धारण कर औरों को भी समझाओ। बाबा तो बहुत सहज बात कहते हैं। नाम ही है सहज ज्ञान। ज्ञान को नालेज कहा जाता है। यह स्कूल है ना। जैसे अल्फ बे पढ़ते हैं ना छोटे बच्चे। आगे भाई लोग पट में बैठ पढ़ाते थे छोटे बच्चों को। तुम भी पट में पढ़ते हो। मास्टर को कुर्सी आद तो होगी ना। यह तुमको कैसे पढ़ाते हैं। अल्फ–अल्ला। बे–बादशाही। कितनी सहज पढ़ाई पढ़ाते हैं। सिर्फ याद करो तो कट निकल जाये। अपना हरेक आपे ही रजिस्टर रखो। देखो हम किसको दुःख तो नहीं देते हैं। कब

झूठ तो नहीं बोलते हैं। सुनावेंगे नहीं तो सौणा दण्ड पड़ जावेगा। और वृद्धि होती जावेगी। समझो कोई विकार में जाता है लिखेंगे नहीं तो गिरते ही रहेंगे। बतलाने से बच जावेगा। यह बहुत बड़ी बीमारी है। तब ही बाप कहते हैं काम पर जीत पहनने से तुम जगत–जीत बनेंगे। अभी तुम बच्चों का दिमाग खुला है। इस तिजोरी में अविनाशी ज्ञान रत्न भरी है। कोई की गाडरेज की, कोई के लोहे की,कोई की कैसी तिजोरी होती है। यह नालेज भी नम्बरवार धारण करने वाले हैं। बाप तो समझते हैं यह पेशेन्ट्स बैठे हैं। तुम स्टुडेन्ट्स भी हो तो पेशेन्ट्स भी हो। बहुत गरीब भी हो। तुम्हारे पास है ही क्या? थोड़े बहुत पैसे जो हैं वह भी जैसे कि नहीं हैं। यह सब खत्म हो जावेगा। इसलिए अभी धणी आया हुआ है पढ़ाने लिए। कहते हैं बच्चियाँ मनुष्यों के कल्याण लिए सेन्ट्र्स खोलते जाओ। अच्छी2 प्वाइंट समझाती रहो। तुम नायब अविनाशी सर्जन हो। वह बाप है सुप्रीम सर्जन। हम हैं नायब। तुम सब पेशेन्ट्स हो। हम सभी को एवर हेल्दी, एवर वेल्दी बनाते हैं श्रीमत पर। बाप द्वारा बच्चों को श्रीमत मिलती हैं तो ऐसे बाप को याद भी करना पड़े। बाबा हमको यह सिखलाते हैं। बाबा को याद करना है तभी ही विकर्म विनाश हों। बाप कहते हैं तुम सभी भक्तियां, सीताएं, ब्राइड्स हो। मैं ही(हूँ) ब्राइडग्रूम। तुम सभी को ससुर घर भेज देता हूँ। तुमको रावण के जेल से छूड़ाता हूं। बाबा बेहद की बातें सुनाते हैं। वह हद की बातें सुनाते हैं। ऐसे नहीं कि लंका सोने की थी। अरे, सोने का भारत था। लंका थोड़े ही थी। सतयुग में यह खारे समुद्र के किनारे गांव हैं। वह होते नहीं। यह सब रावण के राज्य में होते हैं। वहां बम्बई आद होती नहीं। यह भी खारे पानी पर है ना। करांची आद जो भी समुद्र के किनारे है वहां होते नहीं। यह सब खत्म हो जावेगा। कोई कैसे मरेंगे, कोई कैसे मरेंगे। मूसलधार बरसात होगी। नेचुरल–कैलेमिटिज़ है ना। यह आपदाएं कोई की बनाई हुई नहीं हैं। बम्बई भी ऐसे बनाई जो एकदम फट से खत्म कर देंगे। हास्पीटल वा डाक्टर आद होंगे ही नहीं, जो दवाइयाँ आद मिले। बाप को यह भी समझ तो है ना। मुझे बुलाया ही है हमको पावन दुनिया में ले जाओ। तो जरूर पतित दुनिया को खत्म करना पड़े। मैं आया हूं आत्माओं को ले जाने। शरीर तो विनाशी है। शरीरों को थोड़े ही ले जाऊंगा। मूलवतन में शरीर कैसे जावेगा? तुम खुद समझते हो हमारी आत्मा में अभी लाइट नहीं है। दीवा बुझ गया है। कोई मरता है तो तुम लोग दीवा जलाते हो। बहुत खबरदारी रखते हैं कि जाने वाली आत्मा को अंधियारा न हो। अभी तुम बाप के साथ योग लगाते हो तो ज्योत जग जाती है। फिर सतयुग में घर–घर में सोझरा हो जाता है। अंधियारे की वहां बात ही नहीं। यह रोशनी नहीं, आत्मा का जो यह घर है उसमें सोझरा हो जाता है। देवता बन जाते हैं। अभी तुम्हारा दीवा जगा है ना। सोझरा भी आत्मा में आता है। अंधियारा भी आत्मा में होता है। आत्मा तमोप्रधान बनती है तो दीवा बुझ जाता है। अभी बाप कहते हैं मेरे साथ बुद्धि का योग लगाओ तो करेन्ट मिलेंगे। मैं प्युर चकमक हूं। तुम भी प्युर बन जाते हो। यह युक्ति बाप बिगर कोई बता न सके। इसलिए बाप को बुलाते हैं हे पतित–पावन आओ, आकर हमको पावन बनाओ। ज्योत जगाओ। पिछाड़ी में सभी आत्माएं वहां से आ जावेंगी। ढेर आत्माएं जाती हैं। एक थोड़े ही आती हैं। एक वर्ष में कितनी वृद्धि हो जाती है। तो जब ऊपर में खाली होने लगेगा तब हम चलेंगे। शिवबाबा की बारात हुई। शंकर की नहीं। शिवबाबा के पिछाड़ी तुम सभी आत्माएं जावेंगे। जैसे सरसों पीसा जाता है वैसे मनुष्य पीस जावेंगे। यह तो तुम जानते हो हर 5000 वर्ष बाद बाबा आते हैं। आकर नई दुनिया स्थापन करते हैं। बाप 21 जन्मों का वर्सा देते हैं। रावण सराप देती है। राम का वर, रावण का सराप। इस खुल(खेल) को तुम भी अभी समझ गये हो। भारत पर ही यह खेल बना हुआ है। 84 जन्म भी भारतवासी ही लेते हैं। और धर्म वाले नहीं। तो अभी तुम जितना बाबा को याद करेंगे उतना ही विकर्म विनाश होंगे। और फिर आप समान भी बनाना है। नहीं तो मालूम कैसे पड़े? इसलिए बाबा भी लिखते हैं सपूत चाहिए। लिखते हैं इतने को सुनाया, वह कोर्स कर रहा है। हम लिखता हूं उन्हों को निश्चय नहीं है कि बाबा

आया हुआ है। भल पढ़ते भी रहते हैं ; परन्तु निश्चय नहीं। निश्चय अगर हो जाये तो ऐसे बाप के मिलने बिगर रह न सके। फिर बाप कहेंगे जाकर पढ़ो। ऐसा जब हो तो कहेंगे ठीक है। एकदम भागे। बाबा आया हुआ है। जो हमको विश्व का मालिक बनाते हैं। एकदम पागल हो जाये। मिलने बिगर रह न सके। जैसे लाटरी होती है ना। यह भी घोड़ दौड़ हैं। इस शरीर को अश्व भी कहते हैं। रथ है ना। महमूद का घोड़ा भी बहुत श्रृंगारते हैं; क्योंकि उनका रथ था। यह भी रथ है ना। इनको तो श्रृंगारते हैं नहीं। महमूद गया तो उनके घोड़े को श्रृंगारा। अभी यह भी इस रथ पर आये हैं। फिर यह चले जावेंगे। बाद में फिर इस आत्मा का तुम सोमनाथ मंदिर बनावेंगे। अनगिनत धन लगावेंगे मंदिर में। मुझे स्वर्ग में तो मंगावेंगे नहीं। जब भक्तिमार्ग शुरू होगा तब मेरे लिए फर्स्ट क्लास मंदिर आद बनावेंगे। इनसे अच्छा कोई यादगार होता ही नहीं। फिर 5000 वर्ष बाद तुम हमारा यादगार बनावेंगे। हमारा चित्र रखे देंगे। हमको क्या मजा आवेगा?

तो बाबा भिन्न2 प्रकार से कितना समझाते रहते हैं। बाबा कितना कमाल करते हैं। एकदम 21 जन्म लिए निरोगी बना देते हैं। वहां दुःख की बात ही नहीं। योगबल से पैदाइश होती है। भ्रष्टाचार होती ही नहीं। जो इस कुल (के) होंगे वही इन बातों को समझेंगे। बाप की मैसेन्ज(मैसेज) सब को देना है। एक को भी छोड़ना न है। बाबा युक्तियां बतलाते रहते हैं। अखबारों द्वारा, एरोप्लेन द्वारा। आगे थोड़े ही ऐसे2 युक्तियां करते थे। दिन–प्रतिदिन उन्नति को पाते जावेंगे। जिससे सभी को मैसेन्ज(मैसेज) मिल जावेगा। भक्तिमार्ग में याद तो करते हैं ना ; परन्तु आक्युपेशन को ही नहीं जानते। बाप कितनी छोटी बिन्दी है। उसमें सारा पार्ट नूंधा हुआ है। यह सारा खेल आत्मा ही बजाती है। कितनी छोटी बिन्दी है। उनका पार्ट चला रहता है। नींद का भी पार्ट है। फिर उस एक्ट नहीं चलती है। आत्मा बड़ी वन्डरफुल है। यह (ि)रकार्ड कब घिस नहीं सकता। 84 जन्मों का रिकार्ड चलता ही रहता है। इनको कुदरती ही कहते हैं। और कुछ कह न सके। तो बाप मीठे2 बच्चों को समझाते हैं कितना बार तुमको पढ़ाया है। हर 5000 वर्ष बाद आकर पढ़ाता हूं। अनेक बार तुमको पढ़ाया है। यह पाठ हैं संगमयुग का तो अच्छी रीत पढ़ना चाहिए ना। कोई पढ़ते हैं, कोई न पढ़ते हैं तो सभी ड्रामा। यह लड़ाई भी ड्रामा में नूंध है। फिर 5000 वर्ष बाद लगेंगे। मौत भी सबका आना ही है। नई दुनिया तुम बच्चों के लिए बननी है। तुम जानते हो भक्तिमार्ग में बहुत धक्के खाये हैं। ज्ञान में धक्के नहीं है। गृहस्थ व्यवहार में भी रहना ही है। यह ज्ञान अभी तुम बच्चों को ही है इस अंतिम जन्म में। भक्ति तो जन्म–जन्मान्तर करते हो। सीखते सिखलाते रहो। कितना बेहद का नाटक है। बच्चों को अन्दर में यह खुशी होनी चाहिए। सुमिरण करो तो खुशी भी हो; परन्तु माया ऐसी है तो सुमिरण करने नहीं देती है। तुम जितना बाप को याद करते हो उतना बाप भी याद करते हैं। बच्चे बाप को प्यार देते हैं तो बाप नहीं देंगे? कपूत बच्चे तो याद भी नहीं करेंगे। बाप भी उनको याद नहीं करेंगे। जो मुझे याद करते हैं उनको ही मैं याद करता हूं। प्यार भी करता हूं। कहते हैं ना "मिठरा घुरत घुराए" (याद करो तो याद करूं, प्यार करो तो प्यार करूं) तुम प्यार करो तो करेंगे। याद ही न करेंगे तो हम प्यार क्या करेंगे? बहुत अच्छे2 बच्चे हैं तो आत्मा को प्यार किया जाता है। सुनता हूं तकलीफ है तो उनकी आत्मा को बैठ सर्च–लाइट देता हूं। बाकी तो ड्रामा अनुसार जिसको जाना होता है तो चले जाते हैं। भल सर्च–लाइट देता हूं फिर भी चले जाते हैं। तो कहेंगे ड्रामा। उनकी आयु ही इतनी थी। इसमें दुःख की बात नहीं। हिसाब–किताब चुक्तू हो गया। जाकर दूसरा पार्ट बजाना था। रोने की दरकार ही नहीं। सभी को मरना ही है। फिर कितने लिए बैठ रोवेंगे? पीनी अद(आदि) पहनने वाला कोई होगा ही नहीं। सभी मिट्टी में मिल जावेंगे। इसलिए बाप कहते हैं बहुत गई थोड़ी रही। यह पुरानी दुनिया बाकी थोड़ा समय है। तुम अभी पढ़ रहे हो नई दुनिया के लिए। तो जरूर नई दुनिया होगी। पुरानी का विनाश होगा। अच्छा, मीठे2 सिकीलधे बच्चों को (रुहानी) बापदादा का यादप्यार गुडमार्निंग और नमस्ते। नमस्ते।